श्रीस्वामी युगलानन्यशरण जी महाराज

विरचित

श्रीरघुवर-गुण-दर्पण.

द्वितीय संस्करण.

अर्थात्

प्रचलित सुमधुर मनभावन हिन्दी भाषा में श्री जनक-राज-किशोरी जी तथा श्रीरघुनन्दन राजकिशोर जी महाराज के सम्पूर्ण गुणों का सविस्तर वर्णन।



पं० शिवप्रसाद पाण्डेय का० ती० द्वारा संस्कृत तथा खड़ीबोली में परिवर्तित।



पटना—

बाबू रामप्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित,

खड्गविलास प्रेस द्वारा प्रकाशित।

१९२२ ई०।

द्वितीयवार।] [मूल्य ॥।)